विशद
अजितनाथ विधान

अर्घ्य-5
-10
-20
-40
-46
कुल अर्घ्य 121

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद अजितनाथ विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - द्वितीय -2014 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, ब्र. सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी9829076085 आस्था दीदी9660996425,
सपना दीदी 9829127533

संयोजन - किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

मूल्य - 31/- रु. मात्र

-: अर्थ सौजन्य :-

सूरजभान जैन सपरिवार

सदर बाजार, रेवाड़ी फोन : 256636

अंतर ध्वनि

अनादिकाल से संसार का परिणमन अपनी गति से चलता आ रहा है, अनंतकाल तक चलता रहेगा। संसार अनन्त है, संसार में रहने वाले जीव भी अनन्त है किन्तु यदि इंसान भगवान की भक्ति करें तो अपने अनन्त संसार का अन्त अवश्य कर सकता है क्योंकि भक्ति को मोक्षमहल की चाबी कहा जाता है। भगवान की भक्ति ही तो सम्यग्दर्शन है जो कि अनन्त सुखों का कारण है और मुक्ति मंदिर के द्वार पर लगे हुए मिथ्यात्वरूपी ताले को खोलने के लिये कुंजी की तरह है क्योंकि कहा भी है जिनेन्द्र भगवान की भक्ति की भाँति करने से पूर्व संचित कर्म का नाश होता है–

भत्तिए जिणवराणं खीयदि जं पुव्वंसंचिये कम्मं।

भगवान जिनेन्द्र की पूजा करने से कर्मों का क्षय तो होता ही है। साथ ही साथ अनेक बीमारी, बाह्य उपद्रव की व्याधियाँ भी दूर होती है। इन ही मंगल भावना को ध्यान रखते हुए परम पूज्य तीर्थ जीर्णोद्धारक, सिद्धांतविज्ञ, साहित्यरत्नाकर, चँवलेश्वर के छोटे बाबा, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज ने स्वयं लेखनी से सरल भाषा में **'अजितनाथ विधान'** हमारे सामने प्रस्तुत किया है। गुरुवर की महिमा का वर्णन कहाँ तक करें ? शब्द वर्णन करने में समर्थ नहीं है। ऐसे गुरु को पाकर मैं हमेशा गौरवान्वित महसूस करती हूँ जो मुझे इतने महान्, सरल स्वभावी, क्षमामूर्ति, करुणा के सागर, ज्ञान की अमृतवाणी जन–जन पर बरसाने वाले गुरु मिले। यद्यपि स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने पर भी जन–जन के कल्याणार्थ समय–समय पर रचना करते रहते हैं। भगवान गुरुवर को आरोग्य लाभ देकर, समस्त बीमारी, दुःख कष्ट, दर्द मुझे प्राप्त हो जाएँ और मुझे सारे सुख, खुशी, गुरुवर को प्राप्त हो जाए यही मेरी भावना है। अन्त में त्रयभक्ति युक्त नवकोटिपूर्वक बारम्बार नमोस्तु !

जब से तेरा दर्श किया है, मेरे तो श्रद्धान तुम्हीं हो।
जब से तेरी वाणी सुनी है, मेरे सम्यक् ज्ञान तुम्हीं हो।।
जब से तेरा ध्यान किया है, मेरे आतम् ध्यान तुम्हीं हो।
सच कहती हूँ विशदसागर गुरु !, मेरे तो भगवान तुम्हीं हो।।

– ब्र. आरती दीदी (संघस्थ आचार्यश्री विशदसागर)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् !।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अजितनाथ स्तवन

दोहा– कर्मों पर जय पाये हैं, अजितनाथ भगवान।
जिनके चरणों में विशद, करते हैं गुणगान।।

(चौबोला छंद)

कर्म विजेता जिन तीर्थंकर, होते हैं कल्मषहारी।
मानो श्रेष्ठ चन्द्रमा दूजा, उदित हुआ मंगलकारी।।
इन्द्रादि से वन्दनीय है, ऋषीपति जिनराज प्रभो।
अतः बंध कषाय विजित ही, बंदू तुमरे चरण विभो।।1।।

जैसे दिनकर किरण तिमिर को, कर देती है नाश अहा।
देह कांति का सर्व लोक में, वैसा श्रेष्ठ प्रकाश रहा।।
सूर्य कांति तो बाह्य तिमिर की, नाशक जग में कहलाई।
ध्यान दीप की अतिशय कांति, अंतर तम हरती भाई।।2।।

स्वयं पक्ष को श्रेष्ठ मानते, रहे प्रवादी मद में चूर।
वचन रूप तप सिंहनाद से, निर्मद होते सारे क्रूर।।
मद से आर्द्र हुए हैं जिनके, गण्डस्थल जैसे गजराज।
सिंह गर्जना सुनकर भागे, गजराजों का सकल समाज।।3।।

अद्भुत कर्म तेज के धारी, सर्वलोक में परम पवित्र।
ज्ञानानन्त के धारी शाश्वत्, विश्व नेत्र जन–जन के मित्र।।
सर्व दुःख नाशक जिन शासन, तीन लोक में श्रेष्ठ महान्।
स्थित करे परम पद में जो, त्रिभुवन वंदित रहा प्रधान।।4।।

सर्व दोष रूपी मेघों के, सघन कलंक रहित मनहार।
दिव्य ध्वनि अविरोध किरण से, प्रगटित होती मंगलकार।।
भव्य जीवरूपी कुमुदों को, करें प्रफुल्लित चन्द्र समान।
पावन करो पवित्र मेरा मन, करुणा कर मेरे भगवान।।5।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री अजितनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

सागर का जल पीकर भी हम, तृषा शांत न कर पाए।
जन्मादि जरा के रोग मैटने, प्रासुक जल भरकर लाए।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन के वन में रहकर भी, ताप शांत न कर पाए।
संताप नशाने भव–भव का, शुभ गंध चढ़ाने हम लाए।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अक्षय पद पाने हेतु हम, सदा तरसते आए हैं।
अब अक्षय पद पाने को भगवन्, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे ! भगवन् मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुल होकर कामवासना, से हम बहु अकुलाए हैं।
अब काम बाण के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब जीव रहे व्याकुल, जो क्षुधा से बहु अकुलाए हैं।
हो क्षुधा वेदना नाश प्रभो !, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह महा, उसके सब जीव सताए हैं।
हम मोह तिमिर के नाश हेतु, यह अतिशय दीपक लाए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के तीव्र सघन वन से, यह धूप जलाने लाए हैं।
हो अष्ट कर्म का शीघ्र नाश, हम साता पाने आए हैं।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की चाहत में सदियों से, सारे जग में हम भटकाए ।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, अतएव चढ़ाने फल लाए।।
अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि अष्ट द्रव्य, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, हम चरण शरण में आए हैं।।

अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ माह की तिथि अमावस, अजितनाथ लीन्हें अवतार।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण दशमी को जन्मे, जिनवर अजितनाथ तीर्थेश।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराए, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दशमी शुभ माघ वदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

पौष शुक्ल एकादशी आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थंकर अजितेश कहाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिसपद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि चैत पञ्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ति पाई।।

प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाऐं, बस यही भावना भाऐं।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन पूजा के भाव से, कटे कर्म का जाल।
अजित नाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(छन्द मोतियादाम)

जय लोक हितंकर देव जिनेन्द्र, सुरासुर पूजे इन्द्र नरेन्द्र।
करें अर्चन कर जोर महेन्द्र, करें पद वन्दन देव शतेन्द्र।
प्रभु हैं जग में सर्व महान्, करूँ मैं भाव सहित गुणगान।
गर्भ के पूरव से छह मास, बने सुर इन्द्र प्रभु के दास।
करें रत्नों की वृष्टि अपार, करें पद वन्दन बारम्बार।
मनाते गर्भ कल्याणक आन, करें नित भाव सहित गुणगान।
प्रभु का होवे जन्म कल्याण, करें पूजा तब देव महान।
ऐरावत लावें इन्द्र प्रधान, करें गुणगान सुरासुर आन।
करें अभिषेक सभी मिल देव, सुमेरू गिरि के ऊपर एव।
बढ़े जग में आनन्द अपार, रही महिमा कुछ अपरम्पार।
रहे जग में बन के नर नाथ, झुकाते चरणों में सब माथ।
मिले जब प्रभु को कोई निमित्त, लगे तब संयम में शुभ चित्त।
गिरि कन्दर शिखरों पर घोर, सुतप धारें अति भाव विभोर।
जगे फिर प्रभु को केवलज्ञान, करें सुर नर पद में गुणगान।
करें उपदेश प्रभु जी महान, करें सुन के प्राणी कल्याण।
करे प्रभु जी फिर कर्म विनाश, प्रभु करते शिवपुर में वास।
बने अविकार अखण्ड विशुद्ध, अजरामर होते पूर्ण प्रबुद्ध।
जगी मन में मेरे यह चाह, मिले हमको प्रभु सम्यक् राह।

(छन्द घत्तानंद)

जय-जय उपकारी संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
सद्गुण के धारी जिन अविकारी, सर्व दोष के परिहारी।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अजितनाथ से नाथ का, कौन करे गुणगान।
चरण वन्दना कर मिले, उभय लोक सम्मान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः (पाँच बंध के हेतु)

दोहा– हेतु बन्ध के यह कहे, जिन गुण के प्रतिकूल।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करने वह निर्मूल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द जोगीरासा)

है मिथ्यात्व बन्ध का हेतु, बन्ध कराए अपरम्पार।
चतुर्गति में भ्रमण कराए, प्राणी को जो बारम्बार।।
बन्ध के हेतु नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतु मिथ्यात्व रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविरति के कारण भोगों में, रहते हैं प्राणी लवलीन।
कर्म बन्ध का हेतु अविरति, ग्रहण कराए चारित हीन।।
बन्ध के हेतु नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतु अविरति रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बन्ध होता प्रमाद से, जिसके पन्द्रह भेद कहे।
इन्द्रिय और कषाय विकथा, निद्रा स्नेह सब भेद रहे।।
बन्ध के हेतु नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतु प्रमाद रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होता बन्ध कषायों द्वारा, जग जीवों के अपरम्पार।
तीव्र मंद मध्यम कषाय हो, होता बन्ध उसी अनुसार।।
बन्ध के हेतु नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतु कषाय रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्रव बन्ध के हेतु गाए, जैनागम में तीनों योग।
कर्म बन्ध के साथ जीव के, होता दुःखों का संयोग।।
बन्ध के हेतु नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं बन्धहेतु योग रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादि हैं बन्ध के कारण, काल अनादि अपरम्पार।
छुटकारा न पाया इनसे, भ्रमण किया जग बारम्बार।।
बन्ध के हेतु नाश किए प्रभु, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं पञ्चबंध हेतु रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– बन्ध प्रक्रिया के कहे, आगम में दश भेद।
नाश नहीं कर पाए हम, है इसका अब खेद।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

10 भेद बंध प्रक्रिया (छन्द : जोगीरासा)

जीव कर्म हो ऐकामेक, बंधें जीव के कर्म अनेक।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।1।।

ॐ ह्रीं कर्मबंध रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल दे कर्म सुस्थिति पाय, स्थिति ऐसी उदय कहाए।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।2।।

ॐ ह्रीं कर्म उदय रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंधे कर्म सत्ता को पाय, यही कर्म का सत्व कहाय।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।3।।

ॐ ह्रीं कर्म सत्त्व रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की स्थिति बढ़ जाय, कर्मोत्कर्षण यह कहलाए।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।4।।

ॐ ह्रीं कर्मउत्कर्षण रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की स्थिति घट जाय, कर्मापकर्षण यह कहलाए।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।5।।

ॐ ह्रीं कर्म अपकर्षण रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शुभाशुभ बदले रूप, यही संक्रमण का स्वरूप।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।6।।

ॐ ह्रीं कर्म संक्रमण रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति दब जाय, आगम में उपशांत कहाए।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।7।।

ॐ ह्रीं कर्मोपशम रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समय से पहले कर्म विनाश, कर उदीरणा करते नाश।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।8।।

ॐ ह्रीं कर्म उदीरणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म होय हीनाधिक रूप, कहा निधत्ति का स्वरूप।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।9।।

ॐ ह्रीं कर्म निधत्ति रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नहीं हीनाधिक होय, उपशम और उदीरणा खोय।
कर्म निकाचित करें विनाश, करते चेतन गुण में वास।।10।।

ॐ ह्रीं निकाचित कर्म रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म प्रक्रिया का स्वरूप, बतलाया दश भेदों रूप।
जिनवर करते कर्म विनाश, करते चेतन गुण में वास।।11।।

ॐ ह्रीं कर्म दशभेद रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः (20 प्ररूपणा)

दोहा– बीस प्ररूपणा का कथन, करते विधि अनुसार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, नशे भ्रमण संसार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

14 मार्गणा (छन्द जोगीरासा)

गति मार्गणा पाके जीव, दुःख उठाते विशद अतीव।
गति का जिनवर किये विनाश, पाए केवल ज्ञान प्रकाश।।1।।

ॐ ह्रीं गति मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पायें पाँच इन्द्रियाँ लोग, जिनसे हो दुःख का संयोग।
जिनवर करके उनका नाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।।2।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी काय मार्गणा युक्त, भव से न हो पाते मुक्त।
काय मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।3।।

ॐ ह्रीं काय मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों द्वारा आश्रव पाय, प्राणी सारा जगत भ्रमाय।
योग मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।4।।

ॐ ह्रीं योग मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद वेद के गाए तीन, भोगों में रहते तल्लीन।
वेद मार्गणा किए विनाश, होवे केवल ज्ञान प्रकाश।।5।।

ॐ ह्रीं वेद मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम को नित कषे कषाय, आस्रव बन्ध करे दुख पाय।
सब कषाय का करें विनाश, विशद ज्ञान का होय प्रकाश।।6।।

ॐ ह्रीं कषाय मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान मार्गणा में अज्ञान, धारी प्राणी रहे प्रधान।
करके निज आतम का ध्यान, पा लेते हैं केवल ज्ञान।।7।।

ॐ ह्रीं क्षयोपशम ज्ञान मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम और असंयम ज्ञान, रही मार्गणा की पहिचान।
यथाख्यात चारित्र प्रधान, पाकर पाते केवलज्ञान।।8।।

ॐ ह्रीं असंयम रहित यथाख्यातचारित्रसहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दर्शन रही मार्गणा खास, जिससे हो सामान्याभास।
प्राप्त होय जब पुण्य अतीव, केवल दर्शन पावे जीव।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेश्या के छह भेद बताए, अशुभ कर्म के कारण गाए।
लेश्या का कर पूर्ण विनाश, प्राप्त किए प्रभु मुक्ति वास।।10।।

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जीव पाते श्रद्धान, यही भव्य की है पहिचान।
भव्याभव्य मार्गणा नाश, पाते प्राणी शिवपुर वास।।11।।

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या शासन मिश्र प्रधान, उपशम क्षायिक वेदक जान।
सभी मार्गणा किए विनाश, क्षायिक दर्शन पाए खास।।12।।

ॐ ह्रीं मिथ्यारहित सम्यक्त्व मार्गणा सहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

संज्ञी असंज्ञी जानो आप, पाते दोनों बहु संताप।
संज्ञी मार्गणा किए विनाश, पाया केवलज्ञान प्रकाश।।13।।

ॐ ह्रीं संज्ञी मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार मार्गणा के दो भेद, पहुँचाते हैं भारी खेद।
प्रभु ने उनका किया विनाश, पाया केवलज्ञान प्रकाश।।14।।

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सवैया छन्द)

मोह और योग से जीव की प्रवृत्ति होय,
ताको नाम शास्त्र में गुणस्थान गाया है।।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
गुण स्थान से अतीत सिद्ध पद पाया है।।15।।

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भिन्न-भिन्न भाँति-भाँति जीव भेद गाए हैं।
नाम इसका श्रेष्ठ जीव समास गाया है।।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
जीव समास से अतीत सिद्ध पद पाया है।।16।।

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारादि देह के योग्य शक्ति प्राप्त हो,
नाम पर्याप्ति इसका ही बताया है।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
पर्याप्ति से अतीत सिद्ध पद पाया है।।17।।

ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव जिसके योग से जीवन पाय जग में,
वियोग से मरण होय प्राण वह कहाया है।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
जीव प्राण से अतीत सिद्ध पद पाया है।।18।।

ॐ ह्रीं प्राण प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारादि जीव के कोई भी वांछा होय,
इसका नाम आगम में संज्ञा जो बताया है।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
संज्ञातीत जीव ने सिद्ध पद पाया है।।19।।

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान और दर्शन शुभ लक्षण रहा जीव का,
दोय भेद रूप यह उपयोग जो कहाया है।
ज्ञान ध्यान तप शील प्राप्त कर संतों ने,
गुण स्थान से अतीत सिद्ध पद पाया है।।20।।

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहीं मार्गणा चौदह खास, उनसे पाना है अवकाश।
बीस प्ररूपणा का श्रद्धान, करके पाना केवलज्ञान।।21।।

ॐ ह्रीं बीस प्ररूपणा रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– **बाईस परीषह जय करें, दोष अठारह हीन।**
तीर्थंकर इस लोक में, होते ज्ञान प्रवीण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

22 परिषह एवं 18 दोषरहित जिन

(छन्द जोगीरासा)

क्षुधा परीषह जय पाते हैं, मुनि वृन्द होके अविकार।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करें साधना मुनि अनगार।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा परीषह जय करते हैं, वीतराग साधु अनगार।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, जग में होते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुश्किल शीत परीषह जय है, वह भी सहते संत महान।
सम्यक् चारित्र पाने वाले, होते संयम के स्थान।।3।।

ॐ ह्रीं शीत परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी की लपटों को सहते, निष्पृह साधु हो अविकार।
उष्ण परीषह जय के धारी, जग में गाए मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं उष्ण परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंशमशक परीषह जय करते, समता धारी संत प्रधान।
कठिन साधना करने वाले, तीन लोक में रहे महान।।5।।

ॐ ह्रीं दंशमशक परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर बाह्य लाज का कारण, नग्न परीषह सहते हैं।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, समता भाव से रहते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं नग्न परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति परीषह जय के धारी, होते हैं साधु निर्ग्रन्थ।
विशद साधना करने वाले, करते हैं कर्मों का अन्त।।7।।

ॐ ह्रीं अरति परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाव-भाव लखकर स्त्री के, समता से रहते अनगार।
स्त्री परिषह जय करते हैं, वीतराग साधु मनहार।।8।।

ॐ ह्रीं स्त्री परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या परिषह जय धारी मुनि, पैदल करते सदा विहार।
यत्नाचार धरे चर्या में, जिनकी चर्या अपरम्पार।।9।।

ॐ ह्रीं चर्या परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान आदि को बैठें, विविक्त आसन के आधार।
निषद्या परीषह जय करते हैं, जैन मुनि होके अविकार।।10।।

ॐ ह्रीं निषद्या परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षिति शयन एकाशन में मुनि, करते हैं समता को धार।
शैय्या परिषह जय करते हैं, ज्ञानी ध्यानी ऋषि अनगार।।11।।

ॐ ह्रीं शैय्या परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटुक वचन बोलें यदि कोई, फिर भी न करते हैं रोष।
जैन मुनीश्वर समता वाले, परीषह जय धारी आक्रोष।।12।।

ॐ ह्रीं आक्रोश परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वध करे यदि कोई प्राणी, न बोलें मुनि कटु वाणी।
मुनि बध परीषह जय धारी, हैं जग में मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं बध परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-छन्द)

जिन मुनि याचना धारी, परीषह जय करते भारी।
इनकी है महिमा न्यारी, होते हैं मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं याचना परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना लाभ प्राप्त कर पावें, मन में समता उपजावें।
मुनि अलाभ परीषह वाले, इस जग में रहे निराले।।15।।

ॐ ह्रीं अलाभ परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कोई रोग सतावें, मुनि शांत भाव को पावें।
जय रोग परीषह धारी, होते जग में मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं रोग परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृण शूल आदि चुभ जावे, फिर भी मन समता आवे।
तृण स्पर्श जयी कहलावें, परिषह में न घबड़ावें।।17।।

ॐ ह्रीं तृणस्पर्श परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मल से लिप्त हो जावे, मन में आकुलता आवे।
मुनि मल परीषह जय धारी, जग में रहते अविकारी।।18।।

ॐ ह्रीं मल परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्कार पुरस्कार जानो, परीषह जय धारी मानो।
हैं मुनिवरजी शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं सत्कार पुरूस्कार परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर शुभ प्रज्ञा पावें, प्रज्ञा में न हर्षावें।
मुनि प्रज्ञा परिषह धारी, जय पाते हैं अविकारी।।20।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान परीषह गाया, मुनिवर ने जय शुभ पाया।
न खेद हृदय में लावें, मन में समता उपजावें।।21।।

ॐ ह्रीं अज्ञान परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज अदर्शन धारी, होते उसके जयकारी।
मुनिवर परिषह जय पावें, मन में समता उपजावें।।22।।

ॐ ह्रीं अदर्शन परीषह रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठारह दोष से रहित जिन

(चौपाई)

केवलज्ञानी होने वाले, क्षुधा वेदना खोने वाले।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।23।।

ॐ ह्रीं क्षुधादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।24।।

ॐ ह्रीं तृषादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।25।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दोष की होती हानी, बन जाते जो केवल ज्ञानी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।26।।

ॐ ह्रीं जरादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्मय दोष रहे न भाई, केवलज्ञानी के दुःखदायी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।27।।

ॐ ह्रीं विस्मयदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष उनके भी खोवे, केवल ज्ञानी जो भी होवे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।28।।

ॐ ह्रीं अरतिदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खेद दोष के होते त्यागी, केवल ज्ञानी बहु बड़भागी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।29।।

ॐ ह्रीं खेददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग देह में कभी न आवे, जो भी केवल ज्ञान जगावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।30।।

ॐ ह्रीं रोग रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में शोक कभी न लाते, जो नर केवल ज्ञान जगाते।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।31।।

ॐ ह्रीं शोकदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद उनके कैसे रह पावे, जो भी केवल ज्ञान जगावें।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।32।।

ॐ ह्रीं मददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह दोष के हैं वे नाशी, जो हैं केवलज्ञान प्रकाशी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।33।।

ॐ ह्रीं मोहदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय का क्षय उनके हो जावे, केवल ज्ञान मुनि प्रगटावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।34।।

ॐ ह्रीं भयदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा दोष त्यागते स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।35।।

ॐ ह्रीं निद्रादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता उनके हृदय न आवे, जो तीर्थंकर पदवी पावें।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।36।।

ॐ ह्रीं चिंतादोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेद रहे न तन में भाई, जिनने भव से मुक्ति पाई।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।37।।

ॐ ह्रीं स्वेददोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-दोष उनका नश जाए, मुनिवर केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।38।।

ॐ ह्रीं रागदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में द्वेष कभी न लावें, विशद ज्ञान जो मुनि प्रगटावें।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।39।।

ॐ ह्रीं द्वेषदोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण दोष के होते नाशी, केवल ज्ञानी शिवपुर वासी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।40।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाइस परीषह जय के धारी, दोष अठारह के संहारी।
अजितनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।41।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशति परीषहजय एवं अष्टादश दोषरहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- अतिशय पाए हैं प्रभु, प्रातिहार्य भी साथ।
अनन्त चतुष्टय युक्त जिन, झुका रहें हम माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ति की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

10 जन्म के अतिशय के अर्घ

दश अतिशय पावें प्रभु पावन, निर्मल सुखदाई।
स्वेद रहित जिनवर का तन है, अति पावन भाई।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तन है मल मूत्र रहित शुभ, अति पावन भाई।
भव्यों को आह्लादित करता, निर्मल सुखदाई।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।2।।

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समचतुस्त्र संस्थान प्रभु का, सुन्दर सुखदाई।
घट बढ़ अंग न होवे कोई, जिन की प्रभुताई।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।3।।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच संहनन, श्री जिनेन्द्र पाए।
परमौदारिक तन का बल, प्रभु अतिशय प्रगटाए।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित परम सुगंधित श्री जिन, मनहर तन पाए।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, अतिशय दिखलाए।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप सुसुंदर महा मनोहर, श्री जिनवर पाए।
अतिशय रूप के धारी जिनके, पावन गुण गाए।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अधिक इक सहस सुलक्षण, तन में कहलाए।
जन्म होत ही श्री जिनवर ने, मंगलमय पाए।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन में रक्त मनोहर, श्वेत वर्ण भाई।
यह अतिशय अनुपम कहलाए, प्रभु की प्रभुताई।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेतरुधिर सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन का मन मोहित करती, हित-मित प्रिय वाणी।
अतिशय अनुपम मंगलमय है, जग की कल्याणी।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलदायी।।9।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जहाँ में अतिशयकारी, बल जिनवर पाए।
भक्ति भाव से सुर नर प्रभु के, चरणों सिर नाए।।
प्रभु की जानो प्रभुताई।
जन्म का अतिशय पाए, श्री जिन जग मंगलदायी।।10।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 केवलज्ञान अतिशय के अर्घ

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय पावें।
शत् योजन दुष्काल वहाँ का, शीघ्र विनश जावें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभु का, अति विस्मयकारी।
भक्ति भाव से आते मिलकर, वहाँ देव भारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन घातिक्षय जातिशयधारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, भक्ति हितकारी।
मार सके न कोई किसी को, हैं अदया हारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय नहीं उपसर्ग प्रभु पर, किसी तरह भाई।
विशद ज्ञान की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित सारे, जग में जीव कहे।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, बिन आहार रहे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में अधर विराजे, पूर्व दृष्टि कीजे।
भवि जीवों को चतुर्दिशा में, प्रभु दर्शन दीजे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखदर्श घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर प्रभु जी, सकल ज्ञानधारी।
ध्यावें प्रभु को भक्ति भाव से, होवे सुखकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल के परमाणु मिलकर, बने देह भाई।
छाया नहीं पड़े प्रभु तन की, प्रभु अतिशय पाई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।18।।

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बढ़ें नहीं नख केश जरा भी, विशद ज्ञान जगते।
उपमा नहीं है जग में कोई, अति मनहर लगते।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।19।।

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व घातिक्षय जातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलक झपकती नहीं बंद न, खुलती है भाई।
नाशादृष्टि रहे निरन्तर, यह शुभ प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।20।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंदरहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय के अर्घ

चौदह अतिशय कहे देवकृत, श्री जिन के भाई।
अर्धमागधी भाषा प्रभु की, भविजन सुखदाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मैत्रीभाव सभी जीवों में, स्वयं जगे भाई।
महिमा विस्मयकारी है शुभ, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल स्वयं ही, खिल जाते भाई।
श्री जिन का हो गमन जहाँ पर, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम भूमि हो जावे, अति मंगलकारी।
जहाँ चरण पड़ते श्री जिनके, हो विस्मयकारी।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित मंद पवन बहती है, भविजन सुखदाई।
श्रीजिन की महिमा का फल है, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वानंद होय इस जग में, जिन दर्शन पाके।
सुरपति नरपति धन्य मानते, जिन के गुण गाके।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कंटक रहित भूमि हो जावे, श्री जिन पद पाके।
सुरपति नरपति हर्ष मनावें, श्री जिन गुण गाते।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जय जयकार करें सुर, महिमा दिखलावें।
हो अपार सुखकारी जग में, प्रभु के गुण गावें।।

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।28।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि करें सुर, मन में हर्षावें।
जन-जन को हितकारी पावन, महिमा दिखलावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।29।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल तल कमल रचाते, पावन सुखदाई।
सुर नरेन्द्र की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।30।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तलरचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन सुनिर्मल हो जावे अति, श्री जिन के आवें।
नर सुरेन्द्र अति नाचे गावें, मन में हर्षावें।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।31।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दिशाएँ धूम रहित हों, मनहर सुखदाई।
नाचें गावें हर्ष मनावें, सुर नर गुण गाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

धर्मचक्र चलता है आगे, शुभ महिमाधारी।
भवि जीवों के मन को मोहे, अति मंगलकारी।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टय भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट शुभ लावें, भक्ति सहित भाई।
देव समर्पित रहें भाव से, जिन महिमा गाई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आठ प्रातिहार्य के अर्घ्य

(हरिगीतिका छंद)

तरु अशोक सुंदर सुखदाई, दीखे मनहर भाई।
सब जीवों के शोक हरे जो, यह प्रभु की प्रभुताई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।35।।

ॐ ह्रीं अशोकतरु सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पुष्प सुवृष्टि करते सुरगण, मन में अति हर्षावें।
पूजा अर्चा करें वंदना, शुभ अतिशय गुण गावें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती जिनवर की, ओमकार मय प्यारी।
पाप विनाशी धर्म प्रकाशी, जग में मंगलकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।37।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चौंसठ चंवर ढुरें प्रभु आगे, सुंदर शुभम् सुखकारी।
महिमा दिखलाते श्री जिन की, होते विस्मयकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।38।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठिचामर सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रत्न जड़ित सुंदर सिंहासन, जिनवर का सोहे।
अधर विराजे उस पर श्री जिन, सब जग को मोहे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।39।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भामण्डल के आगे लज्जित, कोटि सूर्य होवे।
सप्त भवों को जाने भविजन, मन की जड़ता खोवे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।40।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देव दुंदुभि बाजे बजते, सब आकाश गुँजावें।
देव करें गुणगान भक्ति से, मन में अति हर्षावें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।41।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीन छत्र शुभ रत्न जड़ित हैं, चन्द्र कांति छवि धारी।
तीन लोक की महिमा गावें, शुभ अतिशय सुखकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।42।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चार अनंत चतुष्टय के अर्घ

दर्श अनंत पाए जिनवर जी, सर्व लोक दर्शाये।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, तिन पद शीश झुकाये।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।43।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शन गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवलज्ञान प्रकाशे।
सर्व लोक के ज्ञाता श्रीजिन, सर्व चराचर भासे।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।44।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय को मोहित करके, ऐसा सबक सिखाया।
हार मान झुक गया चरण में, पास नहीं फिर आया।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।45।।

ॐ ह्रीं अनंतसुख गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, जिन अर्हत् कहलाए।
निज आतम का ध्यान लगाकर, वीर्यानन्त प्रगटाए।।
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।।46।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्य गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

छियालिस पाए मूलगुण, अजितनाथ भगवान।
विशद गुणों के हेतु हम, करते हैं गुणगान।।47।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशद्गुणप्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा– सकल गुणों के नाथ को, पूजे सकल समाज।
जयमाला गाते यहाँ, अजित नाथ पद आज।।

(छन्द–स्रग्विणी)

जय अजितनाथ मुक्ति के तुम नाथ हो, श्रेष्ठ आशीष तुम्हारा मेरे साथ हो।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

इन्द्र धरणेन्द्र मनुजेन्द्र तुम्हें ध्यावते, योगि नायक तुम्हारे ही गुण गावते।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

मोह के वश्य हो नाथ दुःख कई सहे, तीनों लोकों में हरदम भटकते रहे।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

चार गतियों के दुःख की कहें क्या कथा, आप सर्वज्ञ हो जानते सब व्यथा।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

धर्म से हीन हम जग भिखारी रहे, सौख्य की चाह में दुःख हमने सहे।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

धन्य सौभाग्य तव आज दर्शन मिला, कर कृपा दीजिए ज्ञान सूरज खिला।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

पञ्च कल्याणधारी जगत के विभु, श्रेष्ठ अतिशय जो पाए हैं तुमने प्रभु।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

कर्मघाती प्रभु आपने चउ हने, शुभ चतुष्टय के धारी तुम अर्हत् बने।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

हम करें भक्ति से आप आराधना, मोक्ष मारग की हो अब मेरी साधना।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

मुक्ति जब तक न हो हम न जाऐं कहीं, आपके पाद की भक्ति छूटे नहीं।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

बोधि का लाभ हो दर्श परिपूर्ण हो, वीर्य सम्यक्त्व का लाभ भी पूर्ण हो।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

धर्म चक्राधिपति आप जग बंध हो, लोक के प्राणियों से तुम अभिवंद्य हो।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

मुक्ति करना शुभम् लक्ष्य अपना रहा, हम बने तब चरण में पुजारी अहा।
पूर्ण हो नाथ मेरी मनोकामना, धर्म की हो मेरे हृदय में भावना।।

(छन्द : घत्तानन्द)

जय–जय श्री जिनवर घाति करम हर, शिव रमणी के शुभ भर्त्ता।
जय–जय केवल रवि, अतिशय तव छवि, मोक्ष मार्ग के हे कर्त्ता।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अजितनाथ तव पाद में, झुका रहे हम माथ।
मुक्ति जब तक न मिले, सदा निभाना साथ।।

इत्याशीर्वादः ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

सम्यक्ज्ञान से अंधकार में भी प्रकाश नजर आता है,
प्रभु चरणों में तो ग्रीष्म में मधुमास नजर आता है।
भक्त की विशद भक्ति का नजारा अजब ही होता है,
प्रभु चरणों में हर पल नया इतिहास नजर आता है।।

श्री 1008 अजितनाथ भगवान की आरती

ॐ जय अजितनाथ स्वामी, प्रभु अजितनाथ स्वामी।
आरति करके हम भी, बने मोक्षगामी।।

ॐ जय.....

माघ सुदी दशमी को, तुमने जन्म लिया। प्रभु तुमने जन्म लिया।
मात विजयसेना जितशत्रु-2, को भी धन्य किया।।

ॐ जय.....

नगर अयोध्या जन्मे, गज लक्षणधारी, स्वामी- गज लक्षणधारी।
आयु लाख बहत्तर पूरब-2, पाये मनहारी।।

ॐ जय.....

साढ़े चार सौ धनुष प्रभु का, तन ऊँचा गाया- स्वामी- तन ऊँचा गाया
माघ सुदी दशमी को प्रभु ने-2, उत्तम तप पाया।।

ॐ जय.....

पौष सुदी दशमी को, विशद ज्ञान पाए, प्रभु-विशद ज्ञान पाए
इन्द्र सभी आकर के-2, चरणों सिर नाए।।

ॐ जय.....

चैत सुदी पाँचें को, शिव पदवी पाए-प्रभु शिव पदवी पाए।
गिरि सम्मेद शिखर को-2, यह जग सिर नाए।।

ॐ जय.....

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र में श्रेष्ठ है, भारत जिसका नाम।
हरियाणा शुभ प्रांत है, ऋषि-मुनियों का धाम।।1।।

रेवाड़ी एक जिला है, जैनों का स्थान।
तीर्थ तिजारा के निकट, होता शोभावान।।2।।

पर्व अढ़ाई के समय, कीन्हा यहाँ प्रवास।
जैनपुरी के मध्य में, जैन भवन में खास।।3।।

रचना पूर्ण विधान की, हुई यहाँ पर आन।
अजितनाथ भगवान का, किया गया गुणगान।।4।।

दो हजार ग्यारह शुभम्, वर्षायोग के पूर्व।
कार्य हुआ यह श्रेष्ठ शुभ, अतिशय कार्य अपूर्व।।5।।

वीर निर्वाण पच्चीस सौ, सैंतीस रहा महान।
दशमी शुक्ल आषाढ़ की, सोमवार दिन मान।।6।।

समय लगे शुभ योग में, लेखन कीन्हा कार्य।
पूजन भक्ति का शुभम, लाभ लेय सब आर्य।।7।।

लघु धी से जो भी लिखा, जानो उसे प्रमान।
भूल-चूक को भूलकर, करो धर्म का ध्यान।।8।।

अन्तिम यह है भावना, जीवन बने महान।
सुख शांति सौभाग्य पा, हो सबका कल्याण।।9।।

अजितनाथ भगवान का, किया गया गुणगान।
गुण पाने के भाव से, रचना हुई महान।।10।।

भाव रहे मेरे शुभम्, यही भावना नाथ।
तीन योग से तव चरण, झुका रहे हम माथ।।11।।

अजितनाथ चालीसा

दोहा– नमन मेरा अरिहंत को, सिद्धों को भी साथ।
आचार्य उपाध्याय साधु को, झुका रहे हम माथ।।
जिनवाणी जिनधर्म जिन, चैत्यालय शुभकार।
अजित के पद युगल, वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई)

जय जय अजितनाथ जिन स्वामी, हो स्वामी तुम अन्तर्यामी।
तुमने सर्व चराचर जाना, जैसा है उस रूप बखाना।।
आप हुए प्रभु केवलज्ञानी, कल्याणी प्रभु तेरी वाणी।
तुमने प्रभु शिवमार्ग दिखाया, आत्मबोध इस जग ने पाया।।
देवों के तुम देव कहाते, सारे जग में पूजे जाते।
विजय अनुत्तर है शुभकारी, चयकर आये हे त्रिपुरारी।।
जम्बूद्वीप लोक में गाया, भरत क्षेत्र उसमें बतलाया।
जिसमें कौशल देश बखाना, नगर अयोध्या अतिशय माना।।
जितशत्रु राजा कहलाए, रानी विजया देवी पाए।
ज्येष्ठ अमावस को जिन स्वामी, गर्भ में आये अन्तर्यामी।।
गर्भ नक्षत्र रोहिणी गाया, ब्रह्ममुहूर्त श्रेष्ठ बतलाया।
माघ शुक्ल दशमी शुभकारी, जन्म लिए जिनवर अविकारी।।
तभी इन्द्र का आसन डोला, लोगों ने जयकारा बोला।
आसन से तब उठकर आया, सप्त कदम चल शीश झुकाया।।
ऐरावत पर चढ़कर आया, साथ में शचि को अपने लाया।
मेरु गिरि पर लेकर जावें, पाण्डुक शिला पर न्हवन करावे।।
इन्द्र ने पद में शीश झुकाया, पग में गज लक्षण शुभ पाया।
हाथ अठारह सौ ऊँचाई, अजितनाथ के तन की गाई।।
लाख बहत्तर पूरब भाई, जिनवर ने शुभ आयु पाई।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा धारे अन्तर्यामी।।

माघ शुक्ल नौमी दिन गाया, संध्याकाल का समय बताया।
देत पालकी सुप्रभ लाए, उसमें प्रभुजी को बैठाए।।
ले उद्यान सेहुतक आए, सप्त वर्ण तरु तल पहुँचाए।
केशलुंच कर वस्त्र उतारे, सहस मुनि सह दीक्षा धारे।।
वेलोपवास किए जिन स्वामी, ध्यान किए निज अन्तर्यामी।।
ब्रह्मदत्त पड़गाहन कीन्हें, क्षीर खीर आहार जो दीन्हें।
पूर्वांग हीन लख स्वामी, तप धारे मुक्ति पथ गामी।
पौष शुक्ल एकादशी पाए, केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए।।
धनपति स्वर्ग से चलकर आया, समवशरण अनुपम बनवाया।
साढ़े ग्यारह योजन जानो, छियालिस कोष श्रेष्ठ पहिचानो।।
प्रातिहार्य से युक्त कहाए, पदमासन में शोभा पाए।
नब्बे गणधर प्रभु के गाए, प्रथम केसरी सिंह कहाए।।
एक लाख मुनि संख्या गाई, श्रेष्ठ यक्षिणी अजिता गाई।
महायक्ष शुभ यक्ष बताया, श्रोता चक्री सागर कहाया।।
तीन लाख श्रावक शुभ जानो, पाँच लाख श्राविकाएँ मानो।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सिद्धवर अतिशय पाये।।
योग निरोध प्रभु ने पाया, एक माह का समय बताया।
चैत शुक्ल पाँचे शुभ गाई, प्रातः तुमने मुक्ति पाई।।
कायोत्सर्गासन जिन पाए, सहस मुनि सह मोक्ष सिधाए।
प्रतिमाएँ कई मंगलकारी, रहीं लोक में अतिशयकारी।
जिनका आलम्बन हम पाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

सोरठा– पढ़े भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
चरण झुकाए माथ, सुख–शांति सौभाग्य हो।।
पावे धन सन्तान, दीन दरिद्री होय जो।
विशद मिले सम्मान, नाम वंश यश भी बढ़े।।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क

विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।

ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik;p jgkA
rsjg Qjojh ca lr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान
64. विशद अभिनव कल्पतरू विधान
65. विशद श्रेयांसनाथ विधान
66. विशद जिनगुण संपत्ति विधान
67. विशद अजितनाथ विधान
68. विशद एकीभाव स्तोत्र विधान
69. विशद ऋषिमण्डल विधान
70. विशद अरहनाथ विधान
71. विशद विषापहार स्तोत्र विधान